ज्ञान की विषयता का सिद्धान्त

— एक मौलिक दार्शनिक निबन्ध —

Descartes के Rationalism का समीक्षात्मक विश्लेषण
एवं एक अनुभवजन्य वैकल्पिक दृष्टि

✍ अवधूत ज्ञानानन्द

प्रस्तावना

पाश्चात्य दर्शन में René Descartes को 'आधुनिक दर्शन का पिता' कहा जाता है। उनके सिद्धान्तों ने पश्चिमी चिन्तन को गहराई से प्रभावित किया। किन्तु जब इन सिद्धान्तों को अनुभव और सूक्ष्म तर्क की कसौटी पर कसा जाता है, तो उनमें कई अर्द्धसत्य और कुछ मिथ्या मान्यताएँ भी प्रकट होती हैं।

यह निबन्ध Descartes के प्रमुख सिद्धान्तों का समीक्षात्मक विश्लेषण है — न केवल पश्चिमी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में, बल्कि भारतीय दर्शन की समृद्ध परम्परा और व्यक्तिगत अनुभव की कसौटी पर भी। यह एक खण्डन मात्र नहीं है — यह एक वैकल्पिक और मौलिक दार्शनिक दृष्टि का प्रस्तुतीकरण है।

१. ज्ञान की विषयता का सिद्धान्त

Descartes का मत

Descartes का मानना था कि सच्चा ज्ञान इन्द्रियों से नहीं, बल्कि तर्क और बुद्धि से मिलता है। उन्होंने गणित को इसका आदर्श उदाहरण माना — '2+2=4' हमेशा सत्य है, चाहे कोई अनुभव हो या नहीं। यह Rationalism का मूल आधार है।

हमारा सिद्धान्त

यह अर्द्धसत्य है। प्रत्येक ज्ञान अपने विषय (object) से अनिवार्य रूप से जुड़ा होता है। '2+2=4' में भी object है — जब बाह्य वस्तु नहीं होती, तब संख्या स्वयं एक गणितीय abstraction के रूप में मन का object बन जाती है। मन उसे object बनाकर उस पर क्रिया करता है। ज्ञान कभी निर्विषय नहीं होता।

> ***"निर्विषय ज्ञान असम्भव है। बाह्य object न हो तो मन abstraction को object बनाकर स्वयं इन्द्रिय बन जाता है।"***

विस्तृत विवेचन

ज्ञान के तीन अनिवार्य तत्व हैं — विषय (object), करण (instrument) और अनुभव (experience)। बाह्य ज्ञान में बाह्य object पाँच इन्द्रियों के माध्यम से अनुभव में आता है। आन्तरिक ज्ञान में abstraction स्वयं object बनता है और मन षष्ठ इन्द्रिय बनकर उसे ग्रहण करता है।

Descartes की भूल यह थी कि उन्होंने देखा गणित में बाह्य object नहीं है और मान लिया कि ज्ञान object-निरपेक्ष हो सकता है। वे यह न देख सके कि जब बाह्य object नहीं होता, abstraction ही मन का object बन जाता है। Object समाप्त नहीं होता — केवल बाहर से भीतर आ जाता है।

यह सिद्धान्त Husserl की Intentionality से मेल खाता है — चेतना सदा किसी की ओर होती है, वह कभी निर्विषय नहीं। भारतीय न्याय दर्शन में भी ज्ञान सदा विषय-विषयी सम्बन्ध से उत्पन्न होता है।

२. बुद्धि की थकान और सत्य का भ्रम

Descartes का मत

Descartes ने 'Methodic Doubt' का सिद्धान्त दिया — जब तक कोई बात संदेह से परे न हो, उसे सत्य मत मानो। संदेह से परे जो हो, वही सत्य है। यह वैज्ञानिक और तार्किक सोच की नींव बनी।

हमारा सिद्धान्त

किन्तु यहाँ एक सूक्ष्म किन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है — जब संदेह समाप्त होता है, तो क्या यह सत्य की प्राप्ति है या बुद्धि की थकान? जब बुद्धि प्रश्न करना बंद कर देती है — तो यह इसलिए नहीं कि वह बात सत्य है, बल्कि इसलिए कि बुद्धि थक गई है या उसने जिज्ञासा छोड़ दी है।

> *"संदेह का अन्त सत्य नहीं— बुद्धि की थकान है।जब तुम्हें लगे कि तुमने सत्य पा लिया — तभी सबसे अधिक सावधान रहो।*

Socrates ने कहा था — 'मैं केवल यह जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता'।Kant ने बुद्धि की सीमाओं का विवेचन किया किन्तु इस सिद्धान्त की भाषा और दृष्टि मौलिक है — यह एक Epistemological Warning है कि निश्चितता का भाव अज्ञान का सूचक भी हो सकता है।

---

३. विचार की उत्पत्ति — जन्मजात या अर्जित

Descartes का मत

Descartes का मानना था कि कुछ विचार जन्मजात (Innate Ideas) होते हैं — ईश्वर का विचार, अनन्त का विचार, गणितीय सत्य।ये मन में जन्म से ही उपस्थित हैं।

हमारा सिद्धान्त

कोई भी विचार जन्मजात नहीं होता।अवलोकन और संस्कार के बिना विचार नहीं होता।जो जन्मजात प्रतीत होता है वह वास्तव में इतने गहरे संस्कारों का परिणाम होता है कि उसकी उत्पत्ति का स्मरण नहीं रहता।

> *"कोई भी विचार जन्मजात नहीं— अवलोकन और संस्कार के बिना विचार नहीं होता।*

John Locke का 'Tabula Rasa' — मन जन्म के समय कोरी स्लेट है — इस दिशा में एक कदम था। किन्तु यह भी अर्द्धसत्य है।जन्म के साथ भूख, प्यास का अनुभव भी जन्म लेता है।जीने की भावना और सुरक्षा की सूक्ष्म चिन्ता भी सहजन्मा होते हैं।

अतः मन न पूरी तरह कोरा है, न पूरी तरह भरा।वह एक जीवित भूमि है जिसमें जैविक वृत्तियों के बीज पहले से हैं, किन्तु विचार के फूल केवल अवलोकन और संस्कार की वर्षा से खिलते हैं।

४. जिजीविषा — विकास नहीं, प्राण-स्वभाव

Darwin और आधुनिक विज्ञान का मत

Darwin और आधुनिक विज्ञान कहते हैं कि जीवित रहने की प्रवृत्ति जैविक विकास का परिणाम है। जो जीना नहीं चाहते थे वे नष्ट हो गए, जो जीना चाहते थे वे बचे — इस प्रकार जिजीविषा चयन का परिणाम है।

हमारा सिद्धान्त

यहाँ एक सूक्ष्म किन्तु मौलिक भेद करना आवश्यक है — जैविक प्रवृत्ति और जैवस्वभाव भिन्न हैं। Darwin 'कैसे' की व्याख्या करते हैं, किन्तु 'क्या है' की परिभाषा नहीं देते।

> *"जिजीविषा जैविक विकास का परिणाम नहीं— यह प्राण का स्वभाव है।जहाँ प्राण है वहाँ जिजीविषा अनिवार्य है — जैसे अग्नि का स्वभाव जलाना है।*

जिसमें जिजीविषा नहीं वह प्राण ही नहीं।Darwin जिजीविषा की व्याख्या करते हैं — वे उसकी उत्पत्ति नहीं समझाते।यह Ontology का प्रश्न है — दर्शन का सबसे गहरा स्तर।

भारतीय सांख्य दर्शन में प्राण के पाँच रूपों में जीवनी शक्ति उनका स्वाभाविक धर्म है।उपनिषदों में 'प्राणो वै जीवनम्' — प्राण ही जीवन है — जीना उसका स्वभाव है, उपलब्धि नहीं।

५. मन, मस्तिष्क और सूक्ष्मशरीर

Descartes का Mind-Body Dualism

Descartes ने कहा कि मन (आत्मा) अभौतिक है और शरीर भौतिक।दोनों Pineal Gland के माध्यम से जुड़े हैं।आधुनिक Neuroscience इसे अस्वीकार करती है और कहती है — मन मस्तिष्क की क्रिया का परिणाम है।

हमारा अनुभवजन्य सिद्धान्त

सूक्ष्मशरीर के प्रत्यक्ष अनुभव से यह स्पष्ट होता है कि मन का मस्तिष्क और स्नायुतंत्र से अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है।सूक्ष्मशरीर में स्नायुतंत्र से भिन्न और मस्तिष्क निरपेक्ष अनुभव होता है।

> *"सूक्ष्मशरीर में मन का अनुभव मस्तिष्क और स्नायुतंत्र से निरपेक्ष होता है — यह प्रत्यक्ष अनुभव का प्रमाण है।*

Neuroscience केवल सहसम्बन्ध (Correlation) सिद्ध करती है — कार्य-कारण सम्बन्ध नहीं।जैसे टेलीविज़न टूटने पर कार्यक्रम बन्द हो जाता है — इसका अर्थ यह नहीं कि कार्यक्रम टेलीविज़न में था।मस्तिष्क की क्षति से मन प्रभावित होता है — इसका अर्थ यह नहीं कि मन मस्तिष्क ही है।

भारतीय दर्शन के पञ्चकोश सिद्धान्त में मनोमय कोश का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है।योग दर्शन में चित्त एक सूक्ष्म तत्व है — स्नायुतंत्र उसका प्रतिबिम्ब है, कारण नहीं।

---

६. 'मैं' — अनुभव नहीं, Noise है

Descartes का Cogito Ergo Sum

Descartes का सबसे प्रसिद्ध सिद्धान्त है — 'Cogito, Ergo Sum' — मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ। उन्होंने इसे दर्शन की अटल नींव माना — वह एक बिन्दु जिस पर संदेह नहीं किया जा सकता।

हमारा सिद्धान्त

किन्तु यह 'मैं' अनुभवात्मक नहीं है — यह अनुमान या उपमान से लब्ध है।विचार-शृंखला का विश्लेषण करें — उत्तरोत्तर सोच का पूर्वपूर्व ज्ञान कारण होता है।यह शृंखला इतनी जटिल और बहुस्तरीय है कि उसका समग्र प्रभाव एक अव्यवस्थित पृष्ठभूमि बन जाता है।

> *"'मैं सोचता हूँ' — यह अनुभव नहीं, अनुमान है।मैं' विचार-शृंखला के समग्र ज्ञान का एक noise है — वह विचार से पृथक् नहीं।*

Descartes ने 'सोचना हो रहा है' — इस अनुभव को — 'मैं सोचता हूँ' — इस अनुमान में बदल दिया।अनुभव और अनुमान का यह भेद उनसे चूक गया।मैं' कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं — वह विचार-प्रवाह की प्रतिध्वनि है।

Hume का Bundle Theory इस दिशा में था — 'मैं' अनुभवों का समूह है किन्तु हमारा सिद्धान्त आगे जाता है — Bundle भी नहीं, उस bundle की समग्र प्रतिध्वनि — noise — है 'मैं' बौद्ध अनात्मवाद 'मैं' की अनुपस्थिति कहता है, हम उसकी उत्पत्ति की व्याख्या करते हैं।

७. जगत — मशीन नहीं, रहस्य है

Descartes का Mechanistic Universe

Descartes ने कहा कि पूरा भौतिक जगत एक मशीन की तरह है जो गणितीय नियमों से चलती है। इस दृष्टि ने आधुनिक विज्ञान को बड़ा आधार दिया।

हमारा सिद्धान्त — दो स्तरों पर खण्डन

प्रथम — ज्ञानमीमांसा स्तर पर: पूरा भौतिक जगत ज्ञात ही नहीं है। जो ज्ञात है वह अत्यल्प है, जो अज्ञात है वह असीमित। अल्पज्ञात से समग्र की परिभाषा देना — यह Hasty Generalisation का तर्कदोष है। अंशज्ञान से सम्पूर्ण की परिभाषा विज्ञान नहीं, अहंकार है।

> *"जो पूर्णतः ज्ञात नहीं — उसे मशीन कैसे कहें? अज्ञान की सीमा पर खड़े होकर सम्पूर्ण की परिभाषा देना — यह दर्शन नहीं, भ्रम है।"*

द्वितीय — तत्त्वमीमांसा स्तर पर: यदि जगत गणितीय नियमों से चलता है, तो नियम का निर्माता और संरक्षक भी अनिवार्य है। नियम स्वयं नहीं बनता। यदि नियन्ता नहीं, तो नियमों में पारस्परिक विरोध होगा — व्यवस्था नहीं, अव्यवस्था होगी। किन्तु जगत में सुसंगत व्यवस्था है — अतः एक नियामक चेतना अनिवार्य है।

मशीन उपमा भ्रामक है क्योंकि मशीन बनाई जाती है, स्वयं नहीं बनती। मशीन स्वयं नियम नहीं बनाती, चेतना नहीं रखती। जगत स्वयं विकसित होता है, जीवन उत्पन्न करता है, चेतना को जन्म देता है।

उपसंहार — एक समग्र दार्शनिक दृष्टि

इस निबन्ध में प्रस्तुत सिद्धान्त न पूर्णतः पश्चिमी हैं, न केवल भारतीय परम्परा का दोहराव।यह एक अनुभवजन्य, तर्काश्रित और मौलिक दार्शनिक दृष्टि है जो प्रत्यक्ष अनुभव को सर्वोच्च प्रमाण मानती है।

Descartes महान थे — उनके सिद्धान्तों ने पाश्चात्य चिन्तन को नई दिशा दी किन्तु महानता का अर्थ पूर्णता नहीं होता।जब हम उनके सिद्धान्तों को अनुभव और सूक्ष्म तर्क की कसौटी पर कसते हैं, तो उनकी सीमाएँ और अर्द्धसत्य प्रकट होते हैं।

हमारे सिद्धान्तों का सार

> *१. ज्ञान सदा सविषय है — निर्विषय ज्ञान असम्भव।*
>
> *२. संदेह का अन्त सत्य नहीं— बुद्धि की थकान हो सकती है।*
>
> *३. विचार जन्मजात नहीं— अवलोकन और संस्कार से जन्मता है।*
>
> *४. जिजीविषा विकास नहीं— प्राण का स्वभाव है।*
>
> *५. मन सूक्ष्मशरीर में मस्तिष्क-निरपेक्ष अनुभव करता है।*
>
> *६. 'मैं' विचार-शृंखला का noise है — अनुभव नहीं।*
>
> *७. जगत मशीन नहीं— नियम है तो नियन्ता भी अनिवार्य है।*

यह दर्शन इसलिए मौलिक है क्योंकि यह किसी एक परम्परा का अनुसरण नहीं करता।यह प्रत्येक सिद्धान्त को उसके अनुभव और तर्क के आधार पर स्वीकार या अस्वीकार करता है।यही वास्तविक दार्शनिक स्वतन्त्रता है।

— अवधूत ज्ञानानन्द